घर को सजाए ऐसे कि दीवारें बोल पड़े वाह...

अधिकांश लोगों का मानना होता है कि घर बड़ा हो या फिर महंगी चीजों और बड़े-बड़े सामानों से ही घर की सजावट होती है। लेकिन घर को सजाने के लिए छोटी से छोटी चीज भी बड़ी मायने रखती है और घर छोटा हो या बड़ा उसकी सजावट का लेकर हर किसी के मन में उथल-पुथल मची ही रहती है। घर को सजाने का सबसे महत्वपूर्ण अंग होता है उसका रंग। रंगों से आप अपने घर को जैसा चाहे वैसा लुक दे सकते है। रंग बड़े घर को छोटा और छोटे घर को बड़ा बना सकते है। लेकिन इसके साथ ही कई ऐसे विकल्प भी है जिनसे आप छोटे से घर को एक एक्सपेंसिव लुक दें सकते हैं। अधिकांश छोटे घरों में दो रूम, किचन, बाथरूम, लिविंग रूम और गार्डन होता है। बड़े घरों को डेकोरेट करना फिर भी आसान होता है। लेकिन छोटे घरों को सजाना थोड़ा मुश्किल हो जाता है। लेकिन आजकल स्पॉट पेंट का स्टाइल है उससे दीवार पर फोटो फेम या किसी भी तरह की पेटिंग लगाने की कोई जरूरत महसुस नहीं होती है। लेकिन आप निम्न बातों के साथ आपने घर को एक डिफरेंट लुक दे सकते हैं :-

रंगों का भी रखें ख्याल

रंग तो कई होते हैं पर आपकी पसंद ही यह निश्चित करती है कि आखिर में कमरा कितना बड़ा या छोटा दिखेगा। गहरे रंग जीवंतता का भाव पैदा करते हैं, लेकिन निश्चित रूप से कमरे को छोटे दिखाते हैं, खासकर तब जब कमरे में पर्याप्त वेंटिलेशन की कमी हो कूल और हल्के रंगों से इसके विपरीत कमरा बड़ा और अधिक खुला दिखता है, जिससे आप उसे अच्छे से डेकोरेट कर पाएगें। घर छोटा हो तो जाहिर है ज्यादा सामान मुसीबत बन जाता है। घर के एक-एक इंच कोने का इस्तेमाल स्मार्ट तरीके से करें। इनमें जो भी सामान रखें वो सलीके से, ताकि जगह का भी इस्तेमाल हो और देखने में भी बुरा न लगे। इस तरह से आप अपने छोटे से घर को भी बेहतर ढ़ग से सजा सकते है और उसके लुक को एक बेहतरीन, शाही, एक्सपेंसिव और खूबसूरत लुक देने के साथ उसकी सजावट का सकते है। जिसे देखकर कोई भी वाह किया बिना नहीं रह सकेगा।

कुशंस से भी सजाएं

मार्केट में कुशंस की काफी वैराइटीज मौजूद है, जैसे-सिल्क, कॉटन, पॉली सिल्क, सिंथेटिक, हाथों से बनाई, मशीन से बनाई, मशीन की सजावट से प्रिंटिट या ब्लॉक प्रिंटिट और केवल प्रिंटिट वाले भी मौजूद हैं। डिफरेंट फेब्रिक के डिजाइन उपलब्ध हैं। जिसे आप आसानी से मिक्स और मैच करके इस्तेमाल करके अपने घर की खूबसूरती बढ़ा सकते हैं। कोटन, सिल्क और पॉलिस्टर के कुशंस सबसे ज्यादा इस्तेमाल किए जा रहे हैं। कोटन कुशंस खासतौर से गर्मी के मौसम में लगाए जाते हैं। सिंथेटिक, जार्जेट सर्दियों के मौसम में इस्तेमाल किए जाने वाले फेब्रिक में आता है। टिशु, वूल, नाइलोन, लेस और वेलवेट के कुशंस रूम को एक हाई प्रोफाइल लुक देते हैं। कुशन की बनावट बहुत तरीकों से की जाती है, जैसे-जरदोजी, एम्ब्रॉयडरी, एपीक्यू, प्रिंटिंग, पेंटिंग आदि जिससे उसकी बनावट में तो चार-चांद लगते ही हैं, साथ ही आपके घर के इंटीरियर को भी एक हाई लुक के साथ-साथ शानदार लुक भी मिल जाता है। कुशंस से इस तरह सजाए **अपने घर को:-**

बड़े कुशन को पीछे रखते हुए उससे छोटे को आगे घटते क्रम में लगाकर रखने से बेड और सोफे का लुक डिफरेंट दिखने के साथ ही आपके डेकोरेटिव कुशन के कपड़े और रंग को भी आसानी से देखा जा सकता है।

डेकोरेटिव कुशंस रूम की शोभा को बढ़ाने के साथ उसे एक डिफरेंट लुक भी देते हैं। खासतौर से खिड़कियों के पास बैठने की जगह पर रखकर, आप उस साइड प्लेस को भी एक आकर्षित लुक दे सकते हैं। इस तरह के कुशन को आप जब पढ़ रहे हों तो सपोर्ट के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं, साथ ही इसे आप रात को बैठकर रूम में बात करते समय साइड सपोर्ट के लिए भी उपयोग कर सकते हैं। रेडिमेड कुशंस की भी मार्केट में काफी वैराइटीज देखी जा रही है। उनमें से नेट और टिशू के फेब्रिक से बने कुशंस देखने में काफी सुंदर लग रहे हैं। धागों से बनी एम्ब्रॉयडरी एक अलग लुक देती है। झालर और सिक्योस लगे रेडिमेड कुशंस और भी सुंदर लगते हैं और एक शाही लुक देते हैं। साथ ही लेदर, साटन, सिल्क, जार्जेट, सिंथेटिक, कॉटन, पॉलिस्टर, जार्जेट मिक्स सिल्क, प्लास्टिक, कॉटन मिक्स सिंथेटिक आदि कई तरह के कुशंस मौजूद हैं।

बेडरूम घर का सबसे सुकून देने वाला स्थान होता है। इसलिए उसकी सजावट और बनावट घर के और स्थानों से अधिक ध्यान देकर बनाई जाती है। बेडरूम में कुशंन से सजावट करते समय यह जरूर ध्यान दें कि जिस रंग की बेडसीट हो, उसी रंग का कुशन या उससे मिक्स मैच करता हुआ ही कुशन रखें। बेड को आप रंगों से भर सकते हैं, जैसे-ब्राउन, रेड और कॉपर के रंग। कुछ गहरे रंग और कुछ डिजाइन या डेकोरेट होते लेकिन ये सब एक-दूसरे के साथ जुड़े होने चाहिए।

अलग-अलग तरह आकार और रंगों के कुशन लेकर उसे सोफे या बेडरूम या फिर साइड कॉर्नर में डिफरेंट तरीके से सजा दें, जिससे देखने वाले को वे अपनी ओर तो आकर्शित करेगा ही, साथ ही डिजाइनर लुक भी देगा। इसके लिए आपको चाहिए कि आप सारी अलग-अलग वैराइटीज के कुशंस लें, जैसे-लेदर, सिल्क और कॉटन के कपड़े के साथ डिफरेंट रंगों और डिजाइनों के फेब्रिक लें।

हर रूम कुछ कहता है

डोर को इस स्टाइल से सजाएं कि वो देखने में अट्रैक्टिव लगे और भरा-भरा सा भी। दीवारों की साइड आप लकड़ी की सीढ़ी स्टाइल के बुकशेल्फ बनाएं। इसके अलावा दरवाजे के ऊपर भी लकड़ी से कैबिनेट बनवाएं। मेन गेट पर विभिन्न प्रकार के पौधों के गमले लगवा सकते है। घर का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा होता है किचन। किचन की सजावट के लिए आप किचन के ड्रा को स्लाइड स्टाइल के बना सकते है। किचन में एक ऐसा अंडर शेल्फ बनवा सकते है जो आपके छोटे-मोटे बर्तनों को एजस्ट कर देता है और एक बटन दबाने पर खुल और बंद हो जाता है जिससे वे किचन को एक स्टालिश लुक तो देता ही है साथ ही जगह भी कम घेरता है। बाकी के शेल्फ दीवार से जुड़े बनवा ले, स्लाइड या शीशे वाले बर्तन रखने वाला ऐसा एजस्ट करवाए जिसमें पानी जमा ना हो पाए। यदि बाकया आपका किचन छोटा है तो आप उसे ऑपन किचन का भी लुक दे सकते है।

जिससे स्पेस के साथ डिनर टेबल भी वही लगा सकते है।

लिविंग रूम में बैठक के लिए आज बहुत सी वैराइटीज मार्केट में उपलब्ध है जिन्हें इस्तेमाल कर आप अपने घर के इस एरिया को भी एक बेहतरीन लुक प्रदान कर सकते है। ज्यादातर लोग वही पुरानी सोफा सेट स्टाइल लिविंग रूम में रखते है चूंकि वे काफी ऑल्ड फैशन हो गया है इसलिए आप उसकी जगह फोल्डिड सोफा सेट या सोफा विथ बेड रख सकते है। इससे टू-इन-वन काम हो जाता है। मेहमान कभी भी घर आ जाते है उनके लिए अपना रूम छोड़ना पड़ जाता है लेकिन अब आपको अपना रूम छोड़ना भी पड़े तो आप भी आराम से सो सकते है और जब सुबह होगी तो उसे फोल्ड कर सकते है। साथ ही लकड़ी का साइड टेबल भी बनवा सकते है उसपर फूलदान या डिजिटल फोटो फेम और स्टेचु भी रख सकते है। लिविंग रूम में सोफों के साथ चाय, कॉफी, स्नैक के लिए लकड़ी का स्टालिश टेबल या शीशें का टेबल भी रख सकते है। ●●●

ताकि न फैलाना पड़े किसी के आगे हाथ

एक समय था जब महिलाएं आर्थिक जरूरतों के लिए अपने पति पर निर्भर रहती थीं। छोटी-मोटी हर जरूरत के लिए पति के आगे हाथ फैलाना पड़ता था। पति ने इनकार कर दिया तो मन मसोस कर रह जाना पड़ता था। उनके पास न तो कोई जमा-पूंजी होती थी और न ही कोई रिटायरमेंट प्लान। ऐसे में अगर पति की मृत्यु हो जाए तो उसे अपना भरण-पोषण करना मुश्किल लगने लगता था। पढ़ी-लिखी होने पर भी महिलाओं को बाहर जाकर काम कर आत्मनिर्भर बनने की आजादी नहीं थी। मगर समय के साथ महिलाएं पढ़-लिख कर कम उम्र में ही आर्थिक रूप से निर्भर हो रही हैं। महिलाओं के शिक्षित होने के बाद उनमें आत्मविश्वास बढ़ा है और नौकरी कर वे परिवार का सहारा बन रही हैं। बात अगर इन्वेस्टमेंट की हो, तो हमेशा महिलाएं पीछे ही रही हैं। मगर अब हालात बदल रहे हैं। ज्यादा से ज्यादा महिलाएं आत्मनिर्भर होने के कारण और देर से शादी करने के कारण इन्वेस्टमेंट में दिलचस्पी लेने लगी हैं। 14 शहरों में जुलाई 2013 में किए गए एक सर्वे के मुताबिक लगभग 25 फीसद कामकाजी महिलाएं अपनी जमापूंजी का फैसला स्वयं लेती हैं। मगर अकेली कामकाजी महिलाओं की संख्या 18 फीसद से भी कम है। महिलाएं हमेशा अपने भविष्य को लेकर लापरवाह रही हैं। परिवार की जरूरतें पहले और उनका भविष्य बाद में, ऐसी ही उनकी हमेशा से सोच रही है। आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण यह काम और भी मुश्किल हो जाता है। कामकाजी महिलाएं तो फिर भी थोड़ा-बहुत जमा कर लेती हैं। मगर घरेलू महिलाएं तो इस बारे में सोचती भी नहीं हैं वह आर्थिक रूप से पूरी तरह अपने पति पर निर्भर होती हैं। महिलाओं को अपनी सेविंग्स को लेकर हमेशा सजग रहना चाहिए। अब तो कई ऐसे प्लान हैं जिसमें इनवेस्ट किया जा सकता है। अगर आपको दुनिया घूमने का शोक हैं तो इसके लिए भी प्लान तैयार हैं। सिंगल वूमन जिनके बच्चे नहीं वे अपना पैसा गाड़ी खरीदने, घर बनाने और अपने माता-पिता की देखभाल में लगाती हैं, उन्हें भी भविष्य की प्लानिंग करनी चाहिए। शादी के

बाद अक्सर पति या ससुराल वालों के न चाहने पर महिलाओं को घर की देखभाल व अपने बच्चों के लिए भी नौकरी छोड़नी पड़ती है। ऐसे में रिटायरमेंट प्लान इनके बहुत काम आता है। कामकाजी महिलाएं थोड़ा बहुत इस प्लान के बारे में सोचती भी हैं पर घरेलू महिलाएं तो सोचती भी नहीं। जबकि उन्हें इस पर ज्यादा सोचने की जरूरत है। अचानक अगर ऐसी-वैसी कोई बात हो जाए तो वे अकेले अपने परिवार को आर्थिक सहायता तो दे सकती हैं। महिलाएं चाहें तो कई तरह के प्लान में अपनी जमापूंजी फिक्सड डिपाजिट, प्रोविडेंट फंट, इक्यूटी और डेब्ट म्यूच्युल फंड के अलावा भी कई जगह इन्वेस्ट कर सकती हैं। अपने स्वास्थ्य को लेकर भी महिलाएं हमेशा लापरवाह होती हैं। ऐसे में हेल्थ इनश्योरेंस उनके लिए बड़ा सहारा बन सकता है। एक सर्वे के मुताबिक 2013 में 38 फीसद महिलाएं हेल्थ को लेकर ज्यादा सजग हुई है। महिलाएं हेल्थ के साथ-साथ मेडिकल बीमा से मैटरनिटी लाभ भी ले सकती हैं। महिलाओं के लिए आर्थिक आजादी का मतलब सिर्फ पैसे कमाना नहीं बल्कि अपने पैसे का सही इस्तेमाल करना भी हैं। अपने व अपने परिवार के लिए। ज्यादा से ज्यादा महिलाएं स्वतंत्र रूप से धनोपर्जन कर रही हैं पर साथ ही तलाक के मामले भी बढ़ रहे हैं। ऐसे में उनके पास इन्वेस्टमेंट के अलावा और कोई विकल्प नहीं होता। महिलाओं के लिए यह जानना बेहद जरूरी है कि अपनी जमा-पूंजी को कैसे सुरक्षित रखें ताकि सालों तक काम आता रहे। साथ में इस बात का भी ख्याल रखें कि परिवार को भी आर्थिक सुरक्षा मिले। रिटायर होने के बाद जिंदगी सुगम हो, स्वास्थ्य के प्रति भी जागरूकता हो, यह कब काम बेहद ही समझदारी से करें और सही जगह अपने पैसे निवेश करें। आर्थिक रूप से सबल होना और उस पर आपका कंट्रोल होना महिलाओं के लिए सबसे बड़ा हथियार है। इसका इस्तेमाल करें और नियोजित ढंग से करें।

सभी प्रसिद्ध धार्मिक स्थल है मौजूद दिल्ली में

विनिता झा

विदेश से कई तादादों में लोग भारत घुमने आते हैं और वे भी खासकर दिल्ली। चूंकि दिल्ली भारत की राजधानी ही नहीं पर्यटन का भी प्रमुख केंद्र भी है। राजधानी होने के कारण भारतीय सरकार के अनेक कार्यालय, राष्ट्रपति भवन, संसद भवन आदि अनेक आधुनिक स्थापत्य के नमूने तो यहां देखे ही जा सकते हैं साथ ही लगभग सभी धर्मों के प्रसिद्ध धार्मिक स्थल यहां हैं बिरला मंदिर, बंगला साहब का गुरुद्वारा, बहाई मंदिर आदि भी मौजूद हैं, जिनमें से निम्न हैः-

छतरपुर मंदिर

छतरपुर मंदिर दिल्ली के सबसे बड़े और सबसे प्रसिद्ध मंदिरों में एक है। छतरपुर मंदिर सफेद संगमरमर से बना हुआ है और इसकी सजावट बहुत की आकर्षक है। दक्षिण भारतीय शैली में बना यह मंदिर विशाल क्षेत्र में फैला है। मंदिर परिसर में खूबसूरत लॉन और बगीचे हैं। मूल रूप से यह मंदिर मां दुर्गा को समर्पित है। इसके अतिरिक्त यहां भगवान शिव, विष्णु, देवी लक्ष्मी, हनुमान, भगवान गणेश और राम आदि देवी-देवताओं के मंदिर भी हैं। लोगों का मानना है कि ऐसा करने से मनोकामना पूर्ण होती है।

लक्ष्मी नारायण मंदिर

लक्ष्मी नारायण मंदिर बिड़ला मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। भगवान विष्णु और देवी लक्ष्मी को समर्पित यह मंदिर दिल्ली के प्रमुख मंदिरों में से एक है। इसका निर्माण 1938 में हुआ था और इसका उद्घाटन राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने किया था। बिड़ला मंदिर अपने यहां मनाई जाने वाली जन्माष्टमी के लिए भी प्रसिद्ध है। यह मंदिर मूल रूप में 1622 में वीर सिंह देव ने बनवाया था, उसके बाद पृथ्वी सिंह ने 1793 में इसका जीर्णोद्धार कराया। सन् 1938 में भारत के बड़े औद्योगिक परिवार, बिड़ला समूह ने इसका विस्तार और पुनरोद्धार कराया।

गुरुद्वारा बंगला साहिब

गुरु हरिकिशन साहिब को समर्पित यह गुरुद्वारा सिक्खों का प्रमुख धार्मिक केंद्र है। गुरु हरि किशन सिक्खों के आठवें गुरु थे। कहा जाता है कि उनके दिल्ली प्रवास के दौरान यहां महामारी फैल गई थी। उस समय गुरु हरि किशन ने बिना किसी भेदभाव के गरीब और असहाय लोगों की सेवा की। गुरुद्वार के परिसर में एक माध्यमिक स्कूल, संग्रहालय, किताबों की दुकान, पुस्तकालय, अस्पताल और एक पवित्र तालाब भी है। देश-विदेश से श्रद्धालुओं का यहां आना जाना लगा रहता है।

बहाई मंदिर

कालकाजी मंदिर के पीछे स्थित है बहाई प्रार्थना केंद्र जिसे लोटस टैंपल या कमल मंदिर के नाम से जाना जाता है। यह मंदिर एशिया महाद्वीप में बना एकमात्र बहाई प्रार्थना केंद्र है। भारत के अलावा पनामा, कंपाला, इल्लिनॉइस, फ्रैंकफर्ट, सिडनी और वेस्ट समोआ में इसके केंद्र हैं। ये सभी केंद्र बहाई आस्था के प्रतीक हैं और अपने अद्वितीय वास्तु शिल्प के लिए प्रसिद्ध हैं। 26 एकड़ में फैले इस मंदिर का निर्माण 1980 से 1986 के बीच हुआ था। तालाब और बगीचों के बीच यह मंदिर ऐसे लगता है जसे पानी में कमल तैर रहा हो। इसका डिजाइन फरीबर्ज सभा ने बनाया था। कमल भारत की सर्वधर्म समभाव की संस्कृति को दर्शाता है। मंदिर के प्रार्थना हॉल में कोई मूर्ति नहीं है। किसी भी धर्म के अनुयायी यहां आकर ध्यान लगा सकते हैं।

काली बाड़ी मंदिर

बिड़ला मंदिर के पास ही काली बाड़ी मंदिर स्थित है। यह छोटा-सा मंदिर काली मां को समर्पित है। नवरात्रि के दौरान यहां भव्य समारोह आयोजित किया जाता है। काली मां को देवी दुर्गा का ही रौद्र रूप माना जाता है। काली बाड़ी मंदिर दिखने में छोटा और साधारण अवश्य है लेकिन इसकी मान्यता बहुत अधिक है। मंदिर के अंदर ही एक विशाल पीपल का पेड़ है। भक्तगण इस पेड़ को पवित्र मानते हैं और इस पर लाल धागा बांध कर मनोकामनाएं पूर्ण होने की कामना करते हैं।

दिगंबर जैन मंदिर

दिल्ली का सबसे पुराना जैन मंदिर लाल किला और चांदनी चौक के सामने स्थित है। इसका निर्माण 1526 में हुआ। वर्तमान में इसकी इमारत लाल पत्थरों की बनी है। इसलिए यह लाल मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। यहां जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ की प्रतिमा भी स्थाकपित है। जैन धर्म के अनुयायियों के बीच यह स्थान बहुत लोकप्रिय है। यहां का शांत वातावरण लोगों का अपनी ओर खींचता है।

कालकाजी मंदिर

प्रसिद्ध कालकाजी मंदिर, भारत में सबसे अधिक भ्रमण किये जाने वाले प्राचीन एवं श्रद्धेय मंदिरों में से एक है। यह दिल्ली में नेहरू प्लेस के पास कालकाजी में स्थित है। यह मंदिर मां दुर्गा की एक अवतार, देवी काली को समर्पित है। यह मनोकामना सिद्ध पीठ के नाम से भी जाना जाता है। मनोकामना का अर्थ है कि यहां भक्तों की सारी इच्छाएं पूर्ण होती हैं। इस मंदिर के पीछे की पौराणिक कथा भी बहुत रोचक है। ऐसा कहा है कि देवी काली का जन्म देवी पार्वती से हुआ था, जो राक्षसों की बड़ी संख्या से अन्य देवताओं की रक्षा करना चाहती थी। देवी ने यहां निवास के रूप में जगह ली और इस प्रकार यह स्थान एक मंदिर के रूप में उभरा। यह मंदिर ईटों की चिनाई द्वारा बनाया गया था परन्तु वर्तमान में यह संगमरमर से सजा है एवं यह चारों ओर से पिरामिड के आकार वाले स्तंभ से घिरा हुआ है। मंदिर का गर्भगृह 12 तरफ है जिसमें प्रत्येक पक्ष पर संगमरमर से सुसज्जित एक प्रशस्त गलियारा है। यहां गर्भगृह को चारों तरफ से घेरे हुए एक बरामदा है जिसमें 36 धनुषाकार मार्ग हैं। हालांकि मंदिर में रोज पूजा होती है पर नवरात्री के त्यौहार के दौरान मंदिर में उत्सव का माहौल होता है। नवरात्री का त्यौहार वर्ष में दो बार आता है। इस दौरान भक्त यहां एकत्रित होते हैं एवं देवी दुर्गा की स्तुति में भजन गाते हैं। इस मंदिर के पास के मुख्य आकर्षण लोटस टेम्पल एवं इस्कॉन मंदिर हैं।

जामा मस्जिद

लाल किले से महज 500 मी। की दूरी पर जामा मस्जिद स्थित है जो भारत की सबसे बड़ी मस्जिद है। इस मस्जिद का निर्माण 1650 में शाहजहां ने शुरु करवाया था। बहुआ पत्थर और सफेद संगमरमर से निर्मित इस मस्जिद में उत्तर और दक्षिण द्वारों से प्रवेश किया जा सकता है। पूर्वी द्वार केवल शुक्रवार को ही खुलता है। इसके बार में कहा जाता है कि सुल्तान इसी द्वार का प्रयोग करते थे। इसका प्रार्थना गृह बहुत ही सुंदर है। इसमें ग्यारह मेहराब हैं जिसमें बीच वाला महराब अन्य से कुछ बड़ा है। इसके ऊपर बने गुंबदों को सफेद और काले संगमरमर से सजाया गया है जो निजामुद्दीन दरगाह की याद दिलाते हैं।

खिड़की मस्जिद

इस मस्जिद का निर्माण फिरोज शाह तुगलक के प्रधानमंत्री खान-ई-जहान जुनैन शाह ने 1380 में करवाया था। मस्जिद के अंदर बनी खूबसूरत खिड़कियों के कारण इसका नाम खिड़की मस्जिद पड़ा। यह मस्जिद दो मंजिला है। मस्जिद के चारों कोनों पर बुर्ज बने हैं जो इसे किले का रूप देते हैं। तीन दरवाजों पर मीनारें बनी हैं। पुराने समय में पूर्वी द्वार से प्रवेश किया जाता था लेकिन अब दक्षिण द्वार पर्यटकों और श्रद्धालुओं के लिए खुला रहता है।

फतेहपुरी मस्जिद

फतेहपुरी मस्जिद चांदनी चौक की पुरानी गली के पश्चिमी छोर पर स्थित है। इसका निर्माण मुगल बादशाह शाहजहां की पत्नी फतेहपुरी बेगम ने 1650 में करवाया था। उन्हीं के नाम पर इसका नाम फतेहपुरी मस्जिद पड़ा। लाल पत्थरों से बनी यह मस्जिद मुगल वास्तुकला का एक बेहतरीन नमूना है। मस्जिद के दोनों ओर लाल पत्थर से बने स्तंभों की कतारें हैं। इस मस्जिद में एक कुंड भी है जो सफेद संगमरमर से बना है। यह मस्जिद कई धार्मिक वाद-विवाद की गवाह रही है। दिल्ली है दिलवालों इसलिए यहां की इमारतें भी दिल से बनाई हुई इसलिए यह इतनी खुबसुरत और शानदार है। लोग इसे जितनी बार भी क्यों ना देख लें लेकिन देखने वालों का मन कभी नहीं भरता। वो कहते है स्वादिष्ट खाने को कितना भी खा लो पेट तो भर जाता है लेकिन मन नहीं भरता बस वही बात हमारी दिल्ली की इन खुबसुरत जगहों की हैं। ●●●